

## MEMORY BASED QUESTIONS OF UGC NET HINDI - 06 JAN 2026 SHIFT 2

**Q1.** देवनागरी लिपि की विशेषता नहीं है?

- (a) यह आक्षरिक है
- (b) इसमें एक वर्ण के लिए ध्वनि है
- (c) वर्णमाला का वर्णक्रम वैज्ञानिक है
- (d) इसमें सुधार की कोई जरूरत नहीं

Answer:

D

Sol:

परिचय: देवनागरी लिपि भारत की सबसे प्रमुख लिपियों में से एक है जिसमें हिंदी, संस्कृत, मराठी, नेपाली आदि भाषाएँ लिखी जाती हैं। यह लिपि अपनी वैज्ञानिकता और व्यवस्थित स्वरूप के लिए जानी जाती है।

जानकारी बूस्टर:

देवनागरी एक आक्षरिक लिपि है जिसमें प्रत्येक अक्षर एक विशिष्ट ध्वनि का प्रतिनिधित्व करता है।

इसमें वर्णों का क्रम वैज्ञानिक है - स्वर, व्यंजन, अयोगवाह आदि के अनुसार व्यवस्थित।

सुधार की आवश्यकता नहीं का कथन गलत है क्योंकि कम्प्यूटर युग में देवनागरी के और सुधार की संभावनाएँ हैं।

अतिरिक्त ज्ञान:

देवनागरी लिपि बायें से दायें लिखी जाती है।

इसमें शिरोरेखा का प्रयोग एक विशिष्ट विशेषता है।

यूनिकोड के मानकीकरण के बाद देवनागरी का कम्प्यूटर प्रयोग आसान हुआ है।

**Q2.** कारक-वर्गीकरण के संदर्भ में कौन-सा कथन असत्य है?

- (a) कारक-कारक साधन/उपकरण बताता है (चिह्न: से/द्वारा)
- (b) अधिकरण-कारक स्थान सूचित करता है (चिह्न: में/पर)
- (c) संप्रदान-कारक वह है जो क्रिया-वस्तु का अपादान बताता है।
- (d) संबंध-कारक स्वामित्व/संबंध दर्शाता है (का/की/के)

Answer:

C

Sol:

परिचय: कारक का ज्ञान वाक्य-संरचना और अर्थ-निर्धारण के लिये अनिवार्य है।

सूचना वर्धक:

1. (c) गलत है: अपादान कारक वह है जो अलगाव/प्रत्याह्वान को दर्शाता (चिह्न: से) — न कि संप्रदान।

2. संप्रदान-कारक वह है जिसके लिये क्रिया की जाती है (चिह्न: को/के लिए)।

3. (a),(b),(d) सभी सही-वर्णन हैं — अतः (c) गलत विकल्प।

अतिरिक्त ज्ञान:

कारक की सही पहचान वाक्य-भाव और समास/विग्रह प्रश्नों में काम आती है।

**Q3.** निम्न बोलियों में से बंगाल (हिसार क्षेत्र) किस भाषा-परिवार की उपभाषा मानी जाती है?

- (a) शौरसेनी → पश्चिमी-हिंदी समूह
- (b) मागधी → पूर्वी-हिंदी समूह
- (c) राजस्थानी → पश्चिम-आर्यन समूह
- (d) द्रविड़ → दक्षिण-भाषाएँ समूह

Answer:

A

Sol:

**परिचय (Introduction):**

भारत में भाषाओं और बोलियों का वर्गीकरण आर्य, द्रविड़, आस्ट्रिक आदि प्रमुख भाषा-परिवारों के अंतर्गत किया गया है। बंगारू हरियाणा के हिसार, भिवानी, सिरसा क्षेत्र में बोली जाने वाली एक पश्चिमी हिंदी उपभाषा है।

**सूचना संवर्द्धक (Information Booster):**

बंगारू (हरियाणवी) का मूल शौरसेनी अपभ्रंश है, जो आगे चलकर पश्चिमी हिंदी समूह में विकसित हुआ। अतः इसका सही वर्गीकरण — शौरसेनी → पश्चिमी हिंदी समूह है।

मागधी से विकसित बोलियाँ (जैसे अवधी, बघेली, छत्तीसगढ़ी) पूर्वी हिंदी समूह की हैं, बंगारू से नहीं जुड़ीं।

राजस्थानी पश्चिम-आर्यन समूह की प्रमुख शाखा है, पर यह पश्चिमी हिंदी से पृथक मानी जाती है।

द्रविड़ भाषा परिवार दक्षिण भारत में प्रचलित (तमिल, तेलुगु, कन्नड़, मलयालम) भाषाओं का समूह है, जिसका बंगारू से कोई संबंध नहीं।

**अतिरिक्त ज्ञान (Additional Knowledge):**

पश्चिमी हिंदी समूह में प्रमुख बोलियाँ हैं – खड़ी बोली, ब्रजभाषा, हरियाणवी (बंगारू), बुंदेली, कन्नौजी।

शौरसेनी अपभ्रंश को खड़ी बोली और ब्रजभाषा का प्रमुख स्रोत माना गया है।

**Q4. 'मुर्दहिया' आत्मकथा को तुलसीराम ने विभिन्न उपशीर्षकों में विभाजित किया है इन उपशीर्षकों का सही क्रम क्या है?**

A. मुर्दहिया के गिद्ध तथा लोकजीवन

B. भूतही पारिवारिक पृष्ठभूमि

C. भूतनिया नागिन

D. मुर्दहिया तथा स्कूली जीवन

E. अकाल में अंधविश्वास

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें :

(a) A, B, C, D, E

(b) B, C, A, D, E

(c) B, D, E, A, C

(d) A, D, C, B, E

Answer:

C

Sol:

'मुर्दहिया' आत्मकथा को तुलसीराम ने विभिन्न उपशीर्षकों में विभाजित किया है इन उपशीर्षकों का सही क्रम है-B, D, E, A, C

पाँच प्रमुख उप-शीर्षक हैं-

भूतही पारिवारिक पृष्ठभूमि (B)

मुर्दहिया तथा स्कूली जीवन (D)

अकाल में अंधविश्वास (E)

मुर्दहिया के गिद्ध तथा लोकजीवन (A)

भूतनिया नागिन (C)

मुर्दहिया'-

लेखक: डॉ. तुलसीराम.

विधा: आत्मकथा.

विषय: दलित जीवन, सामाजिक भेदभाव, व्यक्तिगत संघर्ष, और ग्रामीण जीवन.

महत्व: "मुर्दहिया" दलित साहित्य में एक महत्वपूर्ण कृति है, जो दलितों के जीवन के यथार्थ को उजागर करती है और दलित आत्मकथा लेखन में एक नया मोड़ लाती है।

भाग: यह आत्मकथा दो भागों में प्रकाशित हुई है, "मुर्दहिया" और "मणिकर्णिका".

भाषा: सरल, सहज और प्रभावशाली.

शैली: आत्मकथात्मक, जिसमें लेखक ने अपने जीवन के अनुभवों को सीधे और भावनात्मक रूप से प्रस्तुत किया है।

"मुर्दहिया" का महत्व:

"मुर्दहिया" दलित साहित्य में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है, क्योंकि यह न केवल दलितों के जीवन के संघर्षों को दर्शाती है, बल्कि यह भी दिखाती है कि कैसे एक दलित व्यक्ति अपनी परिस्थितियों से जूझते हुए आगे बढ़ता है। इस आत्मकथा में, तुलसीराम ने जाति व्यवस्था, सामाजिक भेदभाव, और गरीबी जैसे मुद्दों को बेबाकी से उठाया है, जिससे पाठक दलित जीवन की वास्तविकताओं से परिचित होते हैं।

'मुर्दहिया' के सात उपशीर्षक इस प्रकार हैं:

1. भूतही पारिवारिक पृष्ठभूमि-

लेखक के जन्म, परिवार, जातिगत जीवन और सामाजिक ढाँचे की भूमिका।

बाल्यकाल की छाया में पले अंधविश्वास और तंत्र-मंत्र का उल्लेख।

2. मुर्दहिया तथा स्कूली जीवन-

शिक्षा के आरंभिक संघर्ष, जातिगत अपमान, और दलित होने की पीड़ा।

'मुर्दहिया' (१८८८ के पास की ज़मीन) के प्रतीकात्मक महत्व को दर्शाता है।

3. अकाल में अंधविश्वास-

१९५० के दशक में पड़े अकाल की त्रासदी।

भूख और अंधविश्वास में उलझे गाँव के जीवन का यथार्थ चित्रण।

4. मुर्दहिया के गिद्ध तथा लोकजीवन-

शोषण, धार्मिक पाखंड, ब्राह्मणवादी मानसिकता और गाँव की रुद्धियाँ।

मुर्दहिया के आसपास के लोकजीवन की व्याख्या।

5. भूतनिया नागिन-

लोकविश्वासों, प्रेतकथाओं और ग्रामीण कल्पनाओं का विश्लेषण।

डर और आस्था के बीच झूलती सामाजिक मनःस्थिति।

6. शिक्षा और संघर्ष का दौर-

लेखक का शहर जाना, कॉलेज जीवन और दलित चेतना का उभार।

राजनीतिक-सामाजिक सोच का विकास।

7. सांस्कृतिक संघर्ष और आत्मबोध-

ब्राह्मणवादी वर्चस्व के विरुद्ध आत्म-प्रतिबद्धता।

अंबेडकरवाद, बौद्ध धर्म और आत्ममूल्यांकन की प्रक्रिया।

**Q5.** निबंध 'कविता क्या है' के विचारों को सही क्रम में रखिए -

A. कविता का परिभाषात्मक पक्ष

B. कविता और जीवन का संबंध

C. कविता का सौन्दर्यबोध

D. कविता की सामाजिकता

(a) A, B, C, D

(b) B, A, D, C

(c) A, D, B, C

(d) C, A, B, D

Answer:

A

Sol:

परिचय: आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का निबंध 'कविता क्या है' हिन्दी आलोचना का महत्वपूर्ण ग्रंथ है।

सूचना संवर्धक:

पहले कविता की परिभाषा दी गई है।

फिर कविता और जीवन के संबंध पर विचार है।

उसके बाद कविता के सौन्दर्यबोध की व्याख्या की गई है।

अंत में कविता की सामाजिकता को स्पष्ट किया गया है।

अतिरिक्त जानकारी:

(b), (c), (d) विकल्पों में विचारों का क्रम वास्तविक रूप से नहीं रखा गया है।

**Q6.** शिवशंभु के चिट्ठे के संदर्भ में सही नहीं है?

- (a) 'विशाल भारत' 11 अप्रैल 1903 ई. से 9 मार्च 1907 ई. तक प्रकाशित हुआ।
- (b) बालमुकुंद गुप्त का प्रसिद्ध निबन्ध है।
- (c) इसमें गुप्त जी ने अंग्रेजी शासन की आलोचना की है।
- (d) यह निबंध प्रतीकात्मक शैली में लिखा गया है।

Answer:

A

Sol:

परिचय (Introduction): शिवशंभु के चिट्ठे बालमुकुंद गुप्त का प्रसिद्ध व्यंग्य निबंध है जो अंग्रेजी शासन पर कटाक्ष करता है।

जानकारी बूस्टर (Information Booster): • 'विशाल भारत' नहीं बल्कि 'भारत मित्र' पत्रिका में यह प्रकाशित हुआ था • यह तथ्यात्मक गलती है

अतिरिक्त ज्ञान (Additional Knowledge): • बालमुकुंद गुप्त ने अंग्रेजी शासन की कड़ी आलोचना की • यह निबंध प्रतीकात्मक शैली में लिखा गया है • शिवशंभु काल्पनिक पात्र है जिसके माध्यम से व्यंग्य प्रस्तुत किया गया

**Q7.** 'बकरी' नाटक के बारे में स्वयं लेखक के विचार हैं-

- A. यह नाटक न लिखा जाता यदि हिन्दी में कोई ऐसा नाटक होता जिसमें जनचेतना को लोकभाषा और लोकरूपों के माध्यम से सामाजिक अन्याय के साथ जोड़ने का एक नया व्याकरण देखने को मिलता।
- B. यह नाटक लिख लेने के बाद मैंने इब्राहीम अल्काजी से आग्रह किया कि इसे रंगमंच पर प्रस्तुत करें।
- C. इस नाटक के सभी निर्देशकों ने इसके मूल आलेख में कोई परिवर्तन नहीं किया।
- D. यदि हिन्दी के नाटककार यशः प्रार्थी न होकर आम आदमी की पीड़ा, आम आदमी की ज़बान में आम आदमी के बीच ले जाना हिन्दी रंगमंच के लिए अनिवार्य मानते तो यह नाटक न लिखा जाता। नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए :

- (a) केवल A और B
- (b) केवल B और C
- (c) केवल A और D
- (d) केवल B और D

Answer:

C

Sol:

परिचय (Introduction): यह प्रश्न सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के नाटक 'बकरी' के बारे में लेखक के स्वयं के विचारों से संबंधित है।

जानकारी बूस्टर (Information Booster): • लेखक के अनुसार: यह नाटक न लिखा जाता यदि हिन्दी में कोई ऐसा नाटक होता.. (A), यदि हिन्दी के नाटककार यशः प्रार्थी न होकर आम आदमी की पीड़ा.. (D) • ये कथन लेखक की रंगमंचीय दृष्टि और सामाजिक प्रतिबद्धता को दर्शते हैं।

अतिरिक्त ज्ञान (Additional Knowledge): • 'बकरी' नाटक सामाजिक अन्याय और शोषण पर केंद्रित है। • यह नाटक लोकजीवन और लोकभाषा का सशक्त उपयोग करता है।

**Q8.** आधे अधूरे नाटक का पात्र नहीं है?

- (a) महेंद्रनाथ
- (b) मनमोहन
- (c) जुनेजा
- (d) अशोक

Answer:

B

Sol:

**परिचय (Introduction):** आधे अधूरे मोहन राकेश का प्रसिद्ध नाटक है जो मध्यवर्गीय जीवन की टूटन और अधूरेपन को दर्शाता है।

**जानकारी बूस्टर (Information Booster):** • मनमोहन इस नाटक का पात्र नहीं है • महेन्द्रनाथ, जुनेजा और अशोक मुख्य पात्र हैं  
**अतिरिक्त ज्ञान (Additional Knowledge):** • यह नाटक आधुनिक हिंदी नाटक की क्लासिक कृति मानी जाती है • मोहन राकेश ने मध्यवर्गीय संबंधों की जटिलताओं को उजागर किया है

**Q9. 'महाभोज' नाटक का मूल कथानक किस पर आधारित है ?**

- (a) जातीय असमानता
- (b) राजनीतिक षड्यंत्र और सत्ता संघर्ष
- (c) धार्मिक पाखंड
- (d) स्त्री-वेदना और सामाजिक अन्याय

**Answer:**

B

**Sol:**

**परिचय :**

'महाभोज' हिन्दी की प्रमुख कथाकार एवं नाटककार मन्नू भंडारी की रचना है। यह नाटक भारतीय लोकतंत्र की राजनीतिक सञ्चालनों, सत्ता की स्वार्थपरता और जनता के शोषण पर आधारित एक प्रभावशाली राजनीतिक व्यंग्य है।

**जानकारी संवर्द्धक :**

1. नाटक का मूल कथानक एक साधारण व्यक्ति की संदिग्ध मृत्यु पर केन्द्रित है, जिसे राजनीतिक शक्तियाँ सत्ता संघर्ष का हथियार बना लेती हैं।

1. 'महाभोज' में दिखाया गया है कि राजनीति में मानवीय मूल्यों का हास हो चुका है, जहाँ जनसेवा केवल ढोंग बनकर रह गई है।

1. नाटक का शीर्षक 'महाभोज' प्रतीक है उस राजनीतिक भोजका जिसमें जनता की लाशें सत्ता के व्यंजन बनती हैं।

1. इसमें लोकतंत्र के नाम पर चल रही कपट, दमन, और प्रशासनिक निक्रियता का अत्यंत तीखा चित्रण है।

**अतिरिक्त ज्ञान :**

1. 'महाभोज' का पहला मंचन 1980 ई. में हुआ था और इसे राजनीतिक व्यंग्य नाटकके रूप में अत्यधिक सराहना मिली।

1. प्रमुख पात्र — भीम, कोदनराम, सरला, भोलानाथ आदि — व्यवस्था की विभिन्न शक्तियों का प्रतीक हैं।

1. यह नाटक हिन्दी रंगमंच की सबसे चर्चित और साहसिक राजनीतिक कृतियों में गिना जाता है।

1. मन्नू भंडारी की अन्य प्रमुख कृतियाँ — आपका बंटी, स्वयं सिद्धा, एक इंच मुस्कान, यहाँ सच है।

1. उन्होंने 'महाभोज' के माध्यम से दिखाया कि राजनीति जनता नहीं, बल्कि सत्ता की भूख के इर्द-गिर्द घूमती है।

**Q10. 'आधे अधूरे' नाटक के संबंध में सत्य कथन है :**

(A) यह नाटक मौजूदा जीवन की विडम्बना के कुछेक सघन बिन्दुओं को रेखांकित करता है।

(B) श्री ओम शिवपुरी को यह समकालीन ज़िन्दगी का पहला सार्थक हिन्दी नाटक लगता है।

(C) इसके पात्र, स्थितियाँ एवं मनःस्थितियाँ यथार्थपरक तथा विश्वसनीय नहीं लगतीं।

(D) 'आधे अधूरे' आज के जीवन के एक गहन अनुभव-खंड को मूर्त करता है।

(E) इस नाटक की भाषा में वह सामर्थ्य है जो यथार्थ को सजीव बनाती है।

**सही विकल्प चुनिए:**

- (a) केवल A, B, D, E
- (b) केवल A, D, E
- (c) केवल B, C, D
- (d) केवल A, B, C

**Answer:**

A

**Sol:**

**परिचय :**

'आधे अधूरे' हिन्दी रंगमंच के प्रसिद्ध नाटककार मोहन राकेश द्वारा रचित नाटक है। यह नाटक भारतीय मध्यवर्गीय जीवन के असंतोष, टूटन और अस्तित्व संकट को अत्यंत यथार्थ रूप में प्रस्तुत करता है।

**जानकारी संबद्धक :**

1. 'आधे अधूरे' का प्रमुख विषय है — आधुनिक पारिवारिक विघटन और मनुष्य की अधूरी संतुष्टि।
2. नाटक जीवन की विडंबनाओं और संबंधों के संघर्ष को बारीकी से दर्शाता है।
3. इस नाटक को प्रसिद्ध अभिनेता ओम शिवपुरी ने हिन्दी रंगमंच का पहला सच्चा समकालीन नाटक कहा था।
4. इसकी भाषा संवादप्रधान, स्वाभाविक और वास्तविक है — जो पात्रों के मनोभावों को सजीव करती है।
5. 'आधे अधूरे' का प्रत्येक पात्र जीवन की अधूरी इच्छाओं और अपूर्ण संतोष का प्रतीक है।

**अतिरिक्त ज्ञान :**

1. 'आधे अधूरे' में सवित्री, महेन्द्रनाथ, आशा, बिन्दी, अशोक जैसे पात्र हैं, जो टूटते हुए परिवार का चित्र प्रस्तुत करते हैं।
2. नाटक में राकेश ने कहा — "हर व्यक्ति किसी न किसी रूप में अधूरा है।"
3. इसे हिन्दी रंगमंच का मानव मनोविज्ञान पर आधारित सर्वश्रेष्ठ यथार्थवादी नाटक माना जाता है।
4. इस रचना से हिन्दी नाटक में नवयथार्थवाद और आधुनिकता का प्रवेश हुआ।

**Q11.** 'ध्रुवस्वामिनी' नाटक के संबंध में असत्य कथन है :

- (a) यह प्रसाद की रचनाधर्मिता में विशिष्ट स्थान रखता है।
- (b) इस नाटक में नारी की स्वतंत्रता का प्रश्न केंद्र में है।
- (c) इसमें राजनीति की तत्कालीन परिस्थितियों का चित्रण नहीं मिलता।
- (d) यह नाटक इतिहास और प्रेम का समन्वय है।

**Answer:**

C

**Sol:**

**परिचय :**

'ध्रुवस्वामिनी' जयशंकर प्रसाद की एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक-आदर्शवादी नाट्य-कृति है, जिसमें नारी की स्वतंत्रता, आत्मबल और नैतिक दृढ़ता का चित्रण है।

**जानकारी संबद्धक :**

1. यह नाटक प्रसाद की इतिहास-त्रयी (चंद्रगुप्त, स्कन्दगुप्त, ध्रुवस्वामिनी) का अंतिम भाग है।
2. इसमें राजनीति, समाज और नारी की स्थिति — तीनों का गहन समन्वय दिखाया गया है।
3. ध्रुवस्वामिनी का चरित्र स्वतंत्र चिंतन और आत्मनिर्णय की भावना का प्रतीक है।
4. इसलिए विकल्प (c) — "इसमें राजनीति की तत्कालीन परिस्थितियों का चित्रण नहीं मिलता" — असत्य है, क्योंकि नाटक में राजसत्ता, कूटनीति और समाजिक-राजनीतिक परिवेश का गहरा चित्रण है।

**अतिरिक्त ज्ञान :**

1. ध्रुवस्वामिनी प्रसाद की 'नारी स्वतंत्रता और नैतिक आदर्श' की प्रतिनिधि रचना है।
2. पात्र — ध्रुवस्वामिनी, मिहिरदेव, कोमा, मन्दाकिनी — आदर्श और यथार्थ के द्वंद्व का प्रतीक हैं।
3. प्रसाद ने इतिहास का प्रयोग सामाजिक दर्शन और नैतिकता के मंच के रूप में किया है।
4. इस नाटक से हिन्दी रंगमंच को आदर्शवाद और जीवनदर्शन की गहराई प्राप्त हुई।

**Q12.** 'आगरा बाजार' नाटक में आये पात्रों को पहले से बाद के क्रम में लगाइए —

- A. लड्डू वाला
- B. तरबूज वाला
- C. फ़कीर
- D. वर्फावाला
- E. ककड़ी वाला

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:

- (a) A, B, C, E, D
- (b) B, E, A, D, C
- (c) C, A, B, D, E
- (d) A, B, E, C, D

Answer:

C

Sol:

परिचयः

'आगरा बाज़ार' हबीब तनवीर द्वारा लिखा गया एक लोकनाट्य शैली का सामाजिक नाटक है। इसमें आम जनता, बाजार, व्यापारी, कवि और समाज की आर्थिक-सांस्कृतिक स्थिति को बड़े ही सहज और जीवंत रूप में दिखाया गया है।

**सूचना संवर्धक (Information Booster):**

नाटक की शुरुआत फ़क़ीर (भिखारी) से होती है जो समाज के हाशिए पर खड़े वर्ग का प्रतीक है।

इसके बाद मंच पर लड्डू वाला और फिर तरबूज वाला आता है — जो बाजार की हलचल और जीवन्तता को प्रकट करते हैं।

फिर आता है बर्फवाला, जो गर्मी और जीवन की कठोरता के बीच राहत का प्रतीक है।

अंत में ककड़ी वाला आता है, जो संवादों में हास्य और व्यंग्य का रंग जोड़ता है।

अतिरिक्त ज्ञानः

यह नाटक लोक-नाट्य 'नौटंकी' शैली में लिखा गया है।

इसमें आम जन की भाषा और लय के साथ मीर तकी मीर की कविताओं को भी बुना गया है।

पात्रों का क्रम नाटक के सामाजिक जीवन के विस्तार को दिखाता है — निर्धन से सम्पन्न तक की परतें।

**Q13.** 'उसने कहा था' कहानी के लेखक है?

- (a) सुदर्शन
- (b) चंद्रधर शर्मा गुलेरी
- (c) वेद प्रकाश मिश्र
- (d) उपर्युक्त में से एक से अधिक

E. उपर्युक्त में से कोई नहीं

Answer:

B

Sol:

'उसने कहा था' कहानी के लेखक चंद्रधर शर्मा गुलेरी है

उसने कहा था-

चंद्रधर शर्मा गुलेरी द्वारा लिखी गई एक प्रसिद्ध हिंदी कहानी है।

इस कहानी का प्रकाशन वर्ष 1915 ई. है।

यह कहानी प्रथम विश्व युद्ध की पृष्ठभूमि में लिखी गई है और इसमें प्रेम, त्याग, और कर्तव्य की भावना को दर्शाया गया है।

कहानी का मुख्य पात्र लहना सिंह है, जो सूबेदार हजारा सिंह की पत्नी (सूबेदारनी) से बचपन में मिलता है और उसके साथ प्रेम-संबंध विकसित करता है।

लहना सिंह एक सैनिक है जो युद्ध में शामिल होता है। सूबेदारनी एक साधारण महिला है जो अपनी शादी से पहले लहना सिंह को पसंद करती है।

लहना सिंह और सूबेदारनी की मुलाकात बचपन में होती है और दोनों एक-दूसरे से प्रभावित होते हैं।

कहानी प्रथम विश्व युद्ध के दौरान घटती है और युद्ध के दौरान लहना सिंह सूबेदारनी के पति और बेटे की रक्षा करता है।

लहना सिंह सूबेदारनी की रक्षा के लिए अपना जीवन भी त्याग देता है।

कहानी प्रेम और कर्तव्य के बीच संघर्ष को भी दर्शाती है। लहना सिंह सूबेदारनी से प्रेम करता है, लेकिन वह अपने कर्तव्य को निभाने में भी सक्षम होता है।

मुख्य पात्रः

लहना सिंह: कहानी का मुख्य पात्र, एक सैनिक और सूबेदारनी से प्रेम करने वाला।

सूबेदारनी: लहना सिंह से प्रेम करने वाली एक महिला, जो युद्ध के दौरान अपने पति और बेटे की रक्षा के लिए लहना सिंह से मदद मांगती है।

सूबेदार हजारा सिंह: सूबेदारनी का पति, जो युद्ध में शामिल होता है।

चंद्रधर शर्मा गुलेरी की अन्य कहानी - सुखमय जीवन 1911ई., बुद्ध का कांटा 1914ई.

सुदर्शन-

इनका अन्य नाम बद्रीनाथ भट्ट है इनकी कहानियाँ -

पुष्पलता 1919ई., हार की जीत 1922ई., सुप्रभात 1923ई., परिवर्तन 1926ई., सुदर्शन सुधा 1926ई., तीर्थ यात्रा 1927ई., फूलवती 1927ई., सुदर्शन सुमन 1934ई., गल्प मंजरी 1934ई., पनघट 1939ई., अंगूठी का मुकदमा 1940ई.

वेद प्रकाश मिश्र-

हिंदी साहित्य के एक प्रमुख कवि और लेखक हैं, जिनकी रचनाएँ मानवीय संवेदनाओं, सामाजिक मुद्दों और जीवन के विविध पहलुओं को उजागर करती हैं।

प्रमुख कृतियाँ

"दोनों अलग हो गए": यह एक हृदयस्पर्शी कविता संग्रह है, जिसमें जीवन के विभिन्न अनुभवों—प्रेम, दुःख, आशा और आत्मचिंतन—को गहराई से प्रस्तुत किया गया है। इस संग्रह की कविताएँ पाठकों को मानवीय अनुभवों की गहराई में ले जाती हैं और उन्हें आत्ममंथन के लिए प्रेरित करती हैं।

**Q14.** 'ईदगाह' कहानी में 'मोहसिन' मेले से कौन सा खिलौना खरीदता है?

- (a) वकील
- (b) सिपाही
- (c) खंजरी
- (d) भिश्ती

Answer:

D

Sol:

परिचय (Introduction): यह प्रश्न प्रेमचंद की शाश्वत कहानी 'ईदगाह' से है, जो ईद के मेले में जाने वाले गाँव के बच्चों, विशेष रूप से नायक हामिद, के अनुभवों को चित्रित करती है।

जानकारी बूस्टर (Information Booster):

कहानी में, हामिद के दोस्त मोहसिन मेले से एक भिश्ती (पानी ढोने वाले) का खिलौना खरीदता है।

यह विवरण बच्चों की मासूम इच्छाओं और उनके आस-पास के सामाजिक वातावरण (जहाँ भिश्ती एक परिचित व्यवसाय था) को दर्शाता है।

इसके विपरीत, नायक हामिद अपने सारे पैसे बचाकर अपनी दादी के लिए एक चिमटा खरीदता है, जो कहानी का केंद्रीय भावनात्मक बिंदु है।

अतिरिक्त ज्ञान (Additional Knowledge):

अन्य बच्चे खिलौने सिपाही (सैनिक) आदि खरीदते हैं।

'ईदगाह' कहानी निस्वार्थ प्रेम, बाल मनोविज्ञान और गरीबी में मानवीय मूल्यों की जीत की एक सुंदर कहानी है।

**Q15.** 'दुलायीवाली' कहानी में नायिका का संघर्ष किसके विरुद्ध है?

- (a) समाज और पितृसत्ता दोनों के विरुद्ध
- (b) केवल गरीबी के विरुद्ध
- (c) धार्मिक रुढ़ियों के विरुद्ध
- (d) अपने परिवार के विरुद्ध

Answer:

A

Sol:

परिचय: नायिका आर्थिक और सामाजिक दोनों प्रकार के शोषण से टकराती है।

### सूचना वर्धक:

1. कहानी में स्त्री की मेहनत और सम्मान की जंग दिखाई देती है।
  2. समाज उसकी पीड़ा को श्रम की तरह स्वीकार करता है, व्यक्ति की तरह नहीं।
  3. लेखक ने नारी के आत्म-सम्मान को केंद्र में रखा है।
- अतिरिक्त ज्ञान: यह कहानी ग्रामीण समाज में स्त्री-शक्ति के प्रतीकात्मक उदय को दर्शाती है।

**Q16.** निम्नलिखित वाक्य किस कहानी से लिया गया है 'खून का वह आखिरी कतरा जो वतन की हिफाजत में गिरे दुनिया की सबसे अनमोल चीज़ है'?

- (A). आहुति  
 (B). दुनिया का सबसे अनमोल रत्न  
 (C). सुभागी  
 (D). मंत्र

Answer: b

Solution:

प्रेमचंद की कहानी 'दुनिया का सबसे अनमोल रत्न' में यह वाक्य मिलता है: "खून का वह आखिरी कतरा जो वतन की हिफाजत में गिरे दुनिया की सबसे अनमोल चीज़ है।" यह कहानी 1907 में कानपुर से प्रकाशित उर्दू पत्रिका 'ज़माना' में प्रकाशित हुई थी और बाद में प्रेमचंद के पहले कहानी संग्रह 'सोज़े वतन' (1908) में संकलित की गई।

प्रेमचंद की कहानी 'दुनिया का सबसे अनमोल रत्न' में दिलफिगार नामक एक युवक अपनी प्रेमिका दिलफरेब के प्रेम की परीक्षा में सफल होने के लिए दुनिया की सबसे अनमोल वस्तु की खोज में निकलता है। वह पहले एक अपराधी के पश्चाताप के आँसू लाता है, फिर एक सती स्त्री की चिता की राख, लेकिन दिलफरेब इन दोनों को अस्वीकार कर देती है। अंत में, दिलफिगार एक देशभक्त सैनिक के बलिदान के प्रतीक के रूप में उसके खून की अंतिम बूंद लाता है, जिसे दिलफरेब दुनिया का सबसे अनमोल रत्न मानती है। इस कहानी के माध्यम से प्रेमचंद ने देशभक्ति और बलिदान के महत्व को उजागर किया है।

### 1. आहुति:

यह कहानी स्वतंत्रता संग्राम के समय की पृष्ठभूमि पर आधारित है। मुख्य पात्र विशम्भर और आनन्द एक ही विश्वविद्यालय के छात्र हैं। विशम्भर निर्धन होते हुए भी देशभक्ति की भावना से ओत-प्रोत है, जबकि आनन्द संपन्न परिवार से है और स्वाधीनता आंदोलन में सक्रिय नहीं है। रूपमणि, जो पहले आनन्द के निकट थी, विशम्भर के त्याग और समर्पण से प्रभावित होकर उसकी ओर आकर्षित होती है। कहानी में त्याग, देशभक्ति, और व्यक्तिगत संबंधों की जटिलताओं का चित्रण किया गया है। प्रकाशन वर्ष: 1930।

### 2. सुभागी:

प्रेमचंद की कहानी 'सुभागी' एक ग्रामीण परिवेश में नारी के संघर्ष, समर्पण और आत्मनिर्भरता की मार्मिक कथा है। कहानी की नायिका सुभागी, अपने परिवार के प्रति अटूट प्रेम और कर्तव्यनिष्ठा का प्रतीक है। सुभागी एक मेहनती और निपुण लड़की है, जो अपने माता-पिता तुलसी महतो और लक्ष्मी के साथ रहती है। उसका भाई रामू, जो स्वभाव से कठोर और स्वार्थी है, सुभागी के प्रति ईर्ष्या रखता है। सुभागी के विधवा होने के बाद, परिवार में तनाव बढ़ता है, और अंततः तुलसी महतो रामू से अलग होने का निर्णय लेते हैं।

तुलसी महतो की मृत्यु के बाद, सुभागी अपनी माँ लक्ष्मी की देखभाल करती है, लेकिन जल्द ही लक्ष्मी भी चल बसती हैं। माता-पिता के निधन के बाद, सुभागी पर 500 रुपये का ऋण चुकाने की जिम्मेदारी आती है, जिसे वह अपनी मेहनत और लगन से तीन वर्षों में चुका देती है।

कहानी के अंत में, गाँव के मुखिया सजनसिंह, सुभागी के समर्पण और निष्ठा से प्रभावित होकर, उसे अपनी बहू बनाने का प्रस्ताव रखते हैं, जिसे सुभागी विनम्रता से स्वीकार करती है।

'सुभागी' कहानी नारी की आत्मनिर्भरता, त्याग और समाज में उसकी प्रतिष्ठा को उजागर करती है। प्रेमचंद ने इस कथा के माध्यम से ग्रामीण जीवन की सङ्खार्इयों और पारिवारिक संबंधों की जटिलताओं को बखूबी प्रस्तुत किया है।

### 3. मंत्र:

प्रेमचंद की कहानी 'मंत्र' में डॉ. चड्हा, एक प्रतिष्ठित चिकित्सक, अपने निर्धारित गोल्फ खेलने के समय में एक वृद्ध ग्रामीण की गंभीर रूप से बीमार संतान का इलाज करने से इनकार कर देते हैं। वृद्ध की विनती के बावजूद, डॉ. चड्हा उसे अगली सुबह आने के लिए कहते हैं, जिसके परिणामस्वरूप उस रात वृद्ध का पुत्र मृत्यु को प्राप्त होता है।

वर्षों बाद, डॉ. चड्हा का पुत्र कैलाश, अपने जन्मदिन के अवसर पर, एक विषये साँप द्वारा काटे जाने से गंभीर स्थिति में पहुँच जाता है। सभी चिकित्सा प्रयास विफल होते पर, किसी ने सुझाव दिया कि एक वृद्ध व्यक्ति, जो साँप के विष का मंत्र जानता है, कैलाश की जान बचा सकता है। वह वृद्ध वही व्यक्ति होता है, जिसका पुत्र डॉ. चड्हा की उपेक्षा के कारण मरा था।

पहले तो वृद्ध अपने मन में प्रतिशोध की भावना के कारण जाने से इनकार करता है, लेकिन अंततः उसकी मानवता की भावना उसे प्रेरित करती है, और वह कैलाश की जान बचाने के लिए डॉ. चड्हा के घर जाता है। वह अपने मंत्रों और उपचार के माध्यम से कैलाश को ठीक करता है और चुपचाप वहाँ से चला जाता है।

सूची 1 ( रचना )	सूची 2 ( रचनाकार )
A. माटी की मूरते	1. रमणिका गुप्ता
B. मुर्दहिया	2. रामवृक्ष बेनीपुरी
C. आपहूदरी	3. कृष्ण चन्द्र
D. जामुन का पेड़	4. तुलसीराम

Q17. सूची 1 का सूची 2 से मिलान करो -

A B C D

- (A). 1 2 3 4
- (B). 2 4 1 3
- (C). 2 4 3 1
- (D). 4 2 3 1

Answer: b

Solution:

सूची 1 ( रचना )	सूची 2 ( रचनाकार )
A. माटी की मूरते	2. रामवृक्ष बेनीपुरी
B. मुर्दहिया	4. तुलसीराम
C. आपहूदरी	1. रमणिका गुप्ता
D. जामुन का पेड़	3. कृष्ण चन्द्र

सूची 1 का सूची 2 से मिलान - 2 4 1 3

आपहूदरी -

रमणिका गुप्ता की आत्मकथा है

यह आत्मकथा 2015 ईस्वी में लिखी गई

सामंती परिवार में जन्मी रमणिका ने अपने जीवन के हर पन्ने को इसमें प्रस्तुत करने का प्रयास किया है

जामुन का पेड़ -

कृष्ण चन्द्र हास्य व्यंग्य शैली में लिखी गई कहानी है

इस कहानी में सरकारी जीवन शैली में लालफिताशाही की मिश्रित भ्रष्टाचारी व्यवस्था पर करारा व्यंग्य किया गया है जहां इंसानियत की जगह व्यवस्था महत्वपूर्ण हो जाती है

मुर्दहिया -

डॉ. तुलसीराम की आत्मकथा है जो दो खंडों में विभक्त है प्रथम खंड का नाम मुर्दहिया जो 2010 ईस्वी में आया और द्वितीय खंड

का नाम मणिकर्णिका जो 2014ई.में आया

डॉक्टर तुलसीराम ने अपनी जीवन की कथा को पाठ के सामने वैसे ही रख दिया जैसा कि उन्होंने दिया और महसूस किया मुर्द्धिया आजमगढ़ में स्थित लेखक के गांव के शमशान घाट का नाम है यह दलित जीवन की कर्मस्थली है माटी की मूर्ति-

रामवृक्ष बेनीपुरी का रेखा चित्र है

इसका प्रकाशन 1946ई. में हुआ

माटी की मूर्ति में संकलित सभी रेखाचित्र रामवृक्ष बेनीपुरी ने हजारीबाग सेंट्रल जेल में रहते हुए लिखे इन रेखा चित्रों में रामवृक्ष बेनीपुरी ने अपने जीवन के उन चुनीदा लोगों के बारे में लिखा है जो उन्हें अत्यंत प्रिय थे

**Q18.** 'संस्कृति के चार अध्याय' में तिलक के बारे में उपयुक्त बातें कौन सी हैं?

- A. गीता रहस्य में तिलक जी ने सुस्पष्ट घोषणा की कि गीता के उद्देश्य निवृत्ति नहीं प्रवृत्ति का प्रतिपादन किया है।
- B. कर्मण गृहस्थ को योगी, सन्यासी और भक्त समकक्ष नहीं मापा जा सकता है।
- C. तिलक के उपदेश तत्कालीन समय में वीरता, निर्भकता और सच्चाई के सबसे बड़े उपदेश थे।
- D. गीता का मार्ग सन्यास का मार्ग है, संसार त्याग और कर्म न्यास काम मार्ग है।
- E. तिलक जी ने बताया कि योग का अर्थ गीता में कर्म है।

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:

- (A). केवल A, C और E
- (B). केवल B, D और E
- (C). केवल A, C और D
- (D). केवल B, C और E

Answer: A

Solution:

संस्कृति के चार अध्याय में तिलक के बारे में उपयुक्त बातें हैं - केवल A, C और E

A. गीता रहस्य में तिलक जी ने सुस्पष्ट घोषणा की कि गीता के उद्देश्य निवृत्ति नहीं प्रवृत्ति का प्रतिपादन किया है।

C. तिलक के उपदेश तत्कालीन समय में वीरता, निर्भकता और सच्चाई के सबसे बड़े उपदेश थे।

E. तिलक जी ने बताया कि योग का अर्थ गीता में कर्म है।

संस्कृति के चार अध्याय -

॥ रचियता - रामधारी सिंह दिनकर, रचनाकाल - 1956 में प्रकाशित, पुरस्कार - 1959 में साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला।

॥ इस पुस्तक की प्रस्तावना नेहरू द्वारा लिखी गई है।

॥ इस पुस्तक में दिनकर जी ने भारत के सांस्कृतिक इतिहास को चार भागों में बांट कर लिखने का प्रयत्न किया है।

॥ इस रचना में वे स्पष्ट करना चाहते हैं कि भारत का आधुनिक साहित्य प्राचीन साहित्य से किन-किन बातों में भिन और इस भिन्नता का कारण क्या है।

॥ रामधारी सिंह दिनकर का विश्वास है कि भारतीय संस्कृति में चार बड़ी क्रांतियां हुई हैं और हमारी संस्कृति का इतिहास इन्हीं चार क्रांतियों का इतिहास है।

रामधारी सिंह दिनकर के निवंध संग्रह -

॥ मिट्टी की और 1996, अर्धनारीश्वर 1952, रेती के फूल 1954, हमारी सांस्कृतिक एकता 1956, वेणुवन 1958, उजली आग 1956, राष्ट्रभाषा और राष्ट्रीय एकता 1958, धर्म नैतिकता और विज्ञान 1959, वटपीपल 1961, साहित्य मुखी 1968, आधुनिकता बोध 1973.

॥ संस्कृति के चार अध्याय में तिलक के बारे में उपयोगी बातें सही नहीं हैं -

॥ कर्मण गृहस्थ को योगी, सन्यासी और भक्तों के समकक्ष नहीं माना जा सकता।

॥ गीता का मार्ग सन्यास का मार्ग है संसार त्याग और कर्मन्यास का मार्ग है।

**Q19.** पृथ्वीराज रासो रेवा तट समय के बारे में कौनसे कथन सही है?

- A. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने इसका आरंभ शुक - शुकी संवाद से माना है  
 B. पृथ्वीराज रासो के रेवा तट की रचना संवाद शैली में हुई है  
 C. पृथ्वीराज रासो में केवल सात सर्गों को ही प्रमाणित माना गया है  
 D. रेवा तट सर्ग को प्रमाणित माना गया है  
 E. रेवा तट समय में पृथ्वीराज ने रेवा नदी के तट पर अलाउद्दीन खिलजी के साथ हुए भयानक युद्ध का वर्णन है  
 (A). A, B और C  
 (B). A, C और E  
 (C). A, D और E  
 (D). A, B और D

Answer: a

Solution:

पृथ्वीराज रासो रेवा तट के बारे में सही कथन - A, B और C

यह पृथ्वीराज रासो का आंसर जिसकी रचना चंद्रबरदाई ने की थी

चंद्रबरदाई पृथ्वीराज का सखा, सामंत, राज्य मंत्री थे

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने इसका आरंभ शुक - शुकी संवाद से माना है तथा इन्होंने इस अर्थ प्रमाणित रचना मानना है

पृथ्वीराज रासो के रेवा तट की रचना संवाद शैली में हुई है

पृथ्वीराज रासो में केवल सात सर्गों को ही प्रमाणित माना गया है

रेवा तट सर्ग को प्रमाणित नहीं माना गया है

रेवा तट समय में पृथ्वीराज ने रेवा नदी के तट पर मोहम्मद गौरी के साथ हुए भयानक युद्ध का वर्णन है

ऐतिहासिक है जाने वाले काव्य के समान इसमें फैक्ट और फिक्शन इतिहास और कल्पना का मिश्रण है इसमें कथानक में भी रुद्धियों का सहारा लिया गया इसमें रस सृष्टि की ओर अधिक ध्यान दिया गया है कवि की कल्पना का समावेश भी है

सूची 1 (उपन्यास )-	सूची 2 (पात्र )
A. शिभूदयाल	1. आपका बंटी
B. शकुन	2. धरती धन न अपना
C. सोमराज	3. परीक्षा गुरु
D. विशनदास	4. झूठा सच

Q20. सूची 1 का सूची 2 से मिलान कीजिये -

A B C D

(A). 3 1 4 2

(B). 3 2 4 1

(C). 2 3 4 1

(D). 2 4 1 3

Answer: a

Solution:

सूची 1 (उपन्यास )-	सूची 2 (पात्र )
A. शिभूदयाल	3. परीक्षा गुरु
B. शकुन	1. आपका बंटी
C. सोमराज	4. झूठा सच

सूची 1 का सूची 2 से मिलान - 3 1 4 2

परीक्षा गुरु-

यह लाला श्रीनिवास दास का उपन्यास है

जिसका प्रकाशन 1882 ई. में हुआ

इस उपन्यास में तत्कालीन मध्यम वर्गीय जीवन का चित्रण है मिलता है जो पश्चिमी आधुनिकता से विशेष प्रभावित है यह उपन्यास कथा प्रधान नहीं बल्कि उपदेश प्रधान है

यह उपन्यास 41 प्रकरणों में विभक्त है

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने परीक्षा गुरु को अंग्रेजी ढंग का हिंदी का पहला उपन्यास माना है

पात्र - लाला मदन मोहन, लाला ब्रजकिशोर, मुशी चुन्नीलाल, मास्टर शिखदयाल, हरकिशोर, कामिनी, प्रियंवदा, पंडित पुरुषोत्तम दास, हकीम अहमद हुसैन, बाबू बैजनाथ, लाला हरदयाल, हरगोविंद, श्री ब्राइट नि निहाचंद्र मोदी, आगा हसन जान आपका बंटी-

यह मनु भंडारी का उपन्यास है जो 1971 ईस्वी में प्रकाशित हुआ

जो तलाक शुदा दम्पतियों के बच्चों पर पढ़ने वाले प्रभाव से जुड़ा है

यह मनु भंडारी द्वारा रचित एक बाल मनोवैज्ञानिक उपन्यास है

यह 16 भागों में विभक्त है

इस उपन्यास के केंद्र में बनती है जो पारिवारिक विसंगति का शिकार है

पात्र - बंटी, अजय, शकून, बकील चाचा, फूफी, डॉक्टर जोशी, प्रमिला, अमी, जोत, मीरा, चिन्नू, टीटू, कुन्नी, माली चपरासी, बंसीलाल

झूठा सच-

यह यशपाल का उपन्यास है

यह उपन्यास के दो खंडों में विभक्त है 'वतन और देश' 1958 ई. 'देश का भविष्य' 1960 ई.

इस उपन्यास में यशपाल ने 1942 से 1957 तक अर्थात् देश विभाजन से पहले और बाद के उतार-चढ़ाव को दिखाया है

पात्र - तारा, जयदेव पूरी, कनक, असद, शीला, डॉक्टर प्राणाथ सोमराज (आवारा युवक जिसका विवाह तारा से होता है), पंडित गिरधारी लाल, महेंद्र नैयर, करमचंद, कशिश, दोलू मामा, रतन, गौस मोहम्मद, महाजन, मेहर, नब्बू, पुरुषोत्तम, नरेत्तम, मिस्टर रावत आदि

धरती धन न अपना -

यह जगदीश चंद्र का उपन्यास है

लेखक ने यह उपन्यास सोम आनंद को समर्पित किया है

इस उपन्यास का प्रकाशन वर्ष 1972 ई. है

इस उपन्यास में पंजाब के होशियारपुर जिले के दोआब क्षेत्र के घोड़ेवाहा गांव के दलित समाज पर केंद्रित है

पात्र - काली, ज्ञानो, प्रतापी (काली की चाची), जस्सो, मंगू, चौधरी छज्जू साह, विशन दास, निहाली, जीतू, प्रीतो, निकू, शिवराम लद्दो, प्रीतो, नंद सिंह पलो, ठाकरी, संता सिंह

**Q21.** 'मैं नीर भरी दुःख की बदली' का प्रतिपाद्य है-

1. इसमें रहस्यवादी ढंग से जीवन की नश्वरता की बात की गई है।
2. इसमें स्त्री के सामाजिक प्रदेय और श्रेय को रेखांकित किया गया है।
3. स्त्री का जीवन दुःख में ही बीतता रहा है।
4. रत्नी अपने आँसुओं को वर्थ नहीं जाने देती है। वह उसी से नया सृजन करती रही है।

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:

(A). 1 और 3

(B). 2 और 4

(C). 1 और 2

(D). 3 और 4

Answer: d

Solution:

महादेवी वर्मा की कविता 'मैं नीर भरी दुःख की बदली' में कवयित्री ने अपने जीवन की तुलना एक ऐसी बदली से की है, जो दुःख से परिपूर्ण है। वह कहती हैं कि जैसे बदली आकाश में भटकती रहती है, वैसे ही उनका जीवन भी निरंतर दुःखों से घिरा रहा है।

इस कविता में उन्होंने स्त्री के जीवन में व्याप दुःखों और उसकी सहनशीलता को दर्शाया है।

### प्रतिपाद्य:

कविता के मुख्य प्रतिपाद्य निम्नलिखित हैं:

1.

**स्त्री का जीवन दुःख में ही बीतता रहा है:** कवयित्री ने अपने जीवन को दुःख से भरी बदली के रूप में प्रस्तुत किया है, जो निरंतर दुःखों का सामना करती रही है।

2.

**स्त्री अपने आँसुओं को व्यर्थ नहीं जाने देती;** वह उसी से नया सृजन करती रही है: कवयित्री ने संकेत दिया है कि जैसे बदली के जलकण धरती पर गिरकर नए जीवन का सृजन करते हैं, वैसे ही स्त्री अपने दुःखों से सीखकर और मजबूत बनती है, और नए सृजन में योगदान देती है।

इस प्रकार, कविता में स्त्री के जीवन की कठिनाइयों और उसकी सृजनशीलता को मार्मिक रूप से अभिव्यक्त किया गया है।

Information Source:  
महादेवी वर्मा (26 मार्च 1907 – 11 सितंबर 1987) हिंदी साहित्य की प्रमुख कवयित्री, लेखिका और शिक्षाविद थीं। उन्हें छायाचारी युग के चार प्रमुख स्तंभों में से एक माना जाता है और उनकी रचनाओं में गहन भावुकता, कोमलता, और आध्यात्मिकता का समावेश मिलता है।

### जीवन परिचय:

महादेवी वर्मा का जन्म 26 मार्च 1907 को उत्तर प्रदेश के फरुखाबाद जिले में हुआ था। उनके पिता, श्री गोविंद प्रसाद वर्मा, भागलपुर के एक कॉलेज में प्राध्यापक थे, जबकि माता, श्रीमती हेमरानी देवी, धार्मिक और संगीतप्रेमी थीं। महादेवी जी की प्रारंभिक शिक्षा इंदौर के मिशन स्कूल में हुई, जिसके बाद उन्होंने इलाहाबाद के क्रॉस्थवेट गर्ल्स कॉलेज में अध्ययन किया। वहीं उनकी मित्रता सुभद्रा कुमारी चौहान से हुई, जिन्होंने उनकी साहित्यिक प्रतिभा को प्रोत्साहित किया। महादेवी जी ने 1932 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से संस्कृत में एम.ए. की डिग्री प्राप्त की।

### प्रमुख रचनाएँ और प्रकाशन वर्ष:

महादेवी वर्मा की रचनाएँ कविता, निबंध, संस्मरण, और कहानी विधाओं में विस्तृत हैं। उनकी प्रमुख कृतियाँ निम्नलिखित हैं:

1.

### काव्य संग्रह:

2. 'नीहार' (1930): यह उनका प्रथम काव्य संग्रह है, जिसमें 47 गीत संकलित हैं।
3. 'रश्मि' (1932): इस संग्रह में 35 गीत शामिल हैं, जो ज्ञानोदय का आभास कराते हैं।
4. 'नीरजा' (1933): इसमें 58 गीत संकलित हैं, जो हिंदी की श्रेष्ठतम रचनाओं में से एक मानी जाती हैं।
5. 'सांध्यगीत' (1935): इसमें 1934 से 1936 तक की रचनाएँ शामिल हैं।
6. 'दीपशिखा' (1942): यह उनका एक अन्य महत्वपूर्ण काव्य संग्रह है।
7. 'यामा' (1936): यह उनके चार काव्य संग्रहों का संकलन है, जिसे साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया।
- 8.

### गद्य रचनाएँ:

9. 'अतीत के चलचित्र' (1941): इसमें उनके संस्मरण शामिल हैं।
10. 'सृष्टि की रेखाएँ' (1943): यह भी एक संस्मरण संग्रह है।
11. 'पथ के साथी' (1956): इसमें उनके जीवन के विभिन्न साथियों के बारे में लिखा गया है।
12. 'शृंखला की कड़ियाँ' (1942): यह निबंध संग्रह है, जिसमें नारी जीवन की समस्याओं पर विचार किया गया है।
13. 'मेरा परिवार' (1972): इसमें उन्होंने अपने पालतू पशुओं के बारे में लिखा है।

### सम्मान और पुरस्कार:

महादेवी वर्मा को उनके साहित्यिक योगदान के लिए कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया, जिनमें प्रमुख हैं:

- साहित्य अकादमी पुरस्कार (1956): काव्य संग्रह 'यामा' के लिए।
- पद्म भूषण (1956): साहित्य और शिक्षा के क्षेत्र में योगदान के लिए।
- भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार (1982): हिंदी साहित्य में उनके समग्र योगदान के लिए।
- पद्म विभूषण (1988, मरणोपरांत): भारत सरकार द्वारा।

**Q22.** जायसी कृत पदमावत के विषय में कौन सा कथन असंगत है?

- (A). तुलसी कृत 'मानस' के अनुकरण पर जायसी ने भी इसमें दोहा चौपाई शैली को अपनाया
- (B). यह एक प्रेमाख्यान काव्य है
- (C). इसकी भाषा ठेठ अवधि है
- (D). इसमें नागमती का वियोग वर्णन प्रवासजन्य विरह वर्णन के अंतर्गत आता है

Answer: a

Solution:

तुलसी कृत मानस के अनुकरण पर जायसी ने भी इस में दोहा चौपाई शैली को अपनाया है यह कथन जायसी कृत पद्मावत के बारे में असंगत है

जायसी के पद्मावत में 5 -5 चौपाई के बाद 1 दोहे का प्रावधान है इसके बाद 7 -7 चौपाई व 1 दोहे का प्रावधान है जायसी ने तुलसी से कड़वक शैली ग्रहण की है

जायसी कृत पद्मावत के संबंध में कथन है - यह एक प्रेमाख्यान ग्रंथ है इसकी भाषा ठेठ अवधि है इसमें नागमती का वियोग वर्णन प्रवास जने विरह वर्णन के अंतर्गत आता है पद्मावत में 57 खंड तथा प्रिय अलंकार उत्प्रेक्षा है

पद्मावत में नागमती, पद्मावती तथा रतन सेन की प्रेम कहानी है

पद्मावत की कथा पूर्वार्थ भाग कल्पित और उत्तरार्थ भाग ऐतिहासिक है

पद्मावत का नागमती वियोग खंड हिंदी साहित्य की अनुपम निधि है

सूची 1 (आचार्य )	सूची 2 (समय )
A. वामन	1. 8वीं शती
B. भामह	2. 9 वीं शती
C. उदभट्ट	3.7 वीं शती
D. दंडी	4. 6 ठीं शती

**Q23.** सूची 1 का सूची 2 से मिलान कीजिये -

A B C D

- (A). 1 3 4 2
- (B). 1 2 4 3
- (C). 1 4 2 3
- (D). 2 3 4 1

Answer: c

Solution:

सूची 1 (आचार्य )	सूची 2 (समय )
A. वामन	1. 8वीं शती
B. भामह	4. 6 ठीं शती
C. उदभट्ट	2. 9 वीं शती
D. दंडी	3.7 वीं शती

सूची 1 का सूची 2 से मिलान - 1 4 2 3

वामन -

इनका समय 8वीं से 9 वीं शती के बीच है

'काव्यालंकार सूत्र' वामन की रचना है

'काव्यलंकार' इसकी रचना सूत्रों में की गई और सूत्रों पर वृति भी लिखी गई है

इसमें पांच परिच्छेद और 319 सूत्र हैं

भामह -

इनका समय 6 ठीं शती का मध्यकाल है

उनकी रचना काव्यालंकार है

यह 6 परिच्छेदों में व्यक्त ग्रंथ है

उद्भट्ट -

इनका समय 9 वीं शती का पूर्वार्ध है

इनका ग्रंथ 'काव्यलंकार सार संग्रह' है

दंडी-

इनका समय 7 वीं शती का उत्तरार्द्ध है

इनके द्वारा रचित ग्रंथ 'काव्यदर्शि', 'भासमह विवरण' हैं

काव्यदर्शि में चार परिच्छेद और लगभग 650 श्लोक हैं

**Q24.** 'प्रेमचंद घर में' रचना के बारे में सत्य कथन है?

A. इस पुस्तक में शिवरानी देवी ने प्रेमचंद के संपूर्ण जीवन को दर्शाया

B. इसका प्रकाशन सन् 1944 ई. में हुआ

C. प्रेमचंद जी ने मर्यादा, हंस तथा जागरण पत्रिकाओं का संपादन भी किया

D. प्रेमचंद का पहला उपन्यास सेवासदन को माना जाता है किंतु इस पुस्तक के अनुसार इनका पहला उपन्यास 'प्रेमा' को माना गया

E. प्रेमचंद 1938 ईस्वी में प्रगतिशील लेखक संघ के सभापति बने

(A). केवल A, B और C

(B). केवल A, C और D

(C). केवल A, B और E

(D). केवल A, D और E

Answer: a

Solution:

'प्रेमचंद घर में' रचना के बारे में सत्य कथन है-केवल A, B और C

A. इस पुस्तक में शिवरानी देवी ने प्रेमचंद के संपूर्ण जीवन को दर्शाया

B. इसका प्रकाशन सन् 1944 ई. में हुआ

C. प्रेमचंद जी ने मर्यादा, हंस तथा जागरण पत्रिकाओं का संपादन भी किया

प्रेमचंद घर में -

प्रेमचंद घर में प्रेमचंद की जीवनी है जो उनकी पत्नी शिवरानी देवी द्वारा रचित है

इस पुस्तक में शिवरानी देवी ने प्रेमचंद के संपूर्ण जीवन को दर्शाया इसका प्रकाशन सन् 1944 ई. में हुआ  
मुंशी प्रेमचंद का जन्म बनारस जिले के लमही गांव में 31 जुलाई 1880 ई. में हुआ

इसमें के अनुसार प्रेमचंद के पिता का नाम अजायबराय और माता का नाम आनंदीदेवी था

प्रेमचंद को उनके पिताजी ने मुंशी धनपत राय तथा चाचा जी ने मुंशी नवाब राय नाम दिया

प्रेमचंद जी ने मर्यादा, हंस तथा जागरण पत्रिकाओं का संपादन भी किया

प्रेमचंद का पहला उपन्यास प्रेमा को माना जाता है किंतु इस पुस्तक के अनुसार इनका पहला उपन्यास 'कृष्णा' माना गया जो 1905 में प्रयाग में छपा जबकि प्रेमा को दूसरा माना

इनके दो बेटे थे श्रीपति राय (धृन्न) तथा अमृतराय (बन्न) थे

फिल्म कंपनी में काम करने के लिए प्रेमचंद 1934 में पहली बार बंबई गए।

प्रेमचंद 1935 ईस्वी में प्रगतिशील लेखक संघ के सभापति बने

यह महात्मा गांधी के विचारों से प्रभावित थे सेवा इनका मूल धर्म था

शिवरानी देवी ने प्रेमचंद के संपूर्ण जीवन को इस पुस्तक में 88 भागों में दिखाया है

पुस्तक को श्रद्धांजलि बनारसी दास चतुर्वेदी तथा आमुख शिवरानी देवी ने लिखा है

**Q25.** जयशंकर प्रसाद की 'कामायनी' रचना के सर्गों को उनके सही क्रम के अनुसार लगाइये :

A. ईर्ष्या

B. वासना

C. आशा

D. रहस्य

E. निर्वेद

नीचे दिए गए विकल्पों में सही उत्तर का चयन कीजिए:

(A). A, B, C, D, E

(B). C, B, A, E, D

(C). C, A, B, D, E

(D). B, C, A, E, D

Answer: b

Solution:

जयशंकर प्रसाद की कामायनी रचना के सर्गों का सही क्रम है - C, B, A, E, D

जयशंकर प्रसाद -

इनकी कामायनी रचना का प्रकाशन वर्ष 1935 ई. है

कामायनी में कुल 15 सर्ग हैं जिनका नामकरण मानसिक वृत्तियों के आधार पर हुआ इन मानसिक वृत्तियों का क्रम ऐसा रखा गया जैसे मनुष्य के विकास का होता है-

चिंता 2. आशा 3. श्रद्धा 4. काम 5. वासना 6. लज्जा 7. कर्म 8. ईर्ष्या 9. इड़ा 10. स्वप्न 11. संघर्ष 12. निर्वेद 13. दर्शन 14. रहस्य 15. आनंद

अपनी आधुनिक हिंदी साहित्य का सुप्रसिद्ध महाकाव्य ऋग्वेद एवं शतपथ ब्राह्मण में वर्णित जल प्लावन की कथा को आधार बनाकर प्रसाद ने मानव जीवन की विकास यात्रा वर्णन किया है

कामायनी शतपथ ब्राह्मण के आठवें अध्याय से ली गई है

कामायनी महाकाव्य पर मंगला प्रसाद पारितोषिक मिला है

कामायनी में प्रत्याभिज्ञान दर्शन की पुष्टि हुई है इसका उद्देश्य आनंदवाद की स्थापना करना है

डॉ. नरेंद्र ने कामायनी को रूपक काव्य माना है

नामवार सिंह के अनुसार कामायनी के सारे प्रतीक आधुनिक जीवन के लिए गए हैं न की पौराणिक व मिथकीय संदर्भों से इंद्रनाथ मदान 'कामायनी' को एक असफल' कृति मानते हैं

मुक्तिबोध के अनुसार कामायनी एक फेटेसी है

जयशंकर प्रसाद (1889 -1937 ई.) की रचनाएं -

उर्वशी 1909 ई., वन मिलन 1909 ई., प्रेमराज्य 1909 ई., अयोध्या का उद्धार 1910 ई., शोकोच्छश्वास 1910 ई., वभूवाहन 1911 ई., कानन कुसुम 1913 ई., प्रेम पथिक 1913 ई., महाराणा का महत्व 1914 ई., चित्राधार 1918 ई., झरना 1918 ई., आँसु 1925 ई., लहर 1933 ई., कामयनी 1935 ई.

**Q26. 'हम कौन थे, क्या हो गए और क्या होंगे अभी' यह पंक्ति मैथिली शरण गुप्त की किस रचना से है?**

(A). भारत- भारती

(B). यशोधरा

(C). द्वापर

(D). रंग में भंग

Answer: a

Solution:

'हम कौन थे, क्या हो गए और क्या होंगे अभी' यह पंक्ति मैथिली शरण गुप्त की भारत- भारती रचना से है

भारत भारती -

भारत भारतीय राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की प्रसिद्ध रचना है

इसका प्रकाशन वर्ष 1912 ईस्वी में हुआ

यह तीन करों में विभक्त है -

1. अतीत खंड

2. वर्तमान खंड

3. भविष्यत खंड

तीन खंडों में विभाजित यह कविता देश के अतीत और वर्तमान का मूल्यांकन करते हुए भविष्य के प्रति सबको सचेत करती है।

संपूर्ण कविता की एक अध्याय पंक्ति है 'हम कौन थे, क्या हो गए और क्या होंगे अभी'

भारत भारती नवजागरण के उद्घोषण का काव्य है।

इसमें मूल चिंता यही व्यक्ति की गई है कि जिस भारत का अतीत इतना गौरवपूर्ण है वही आज इतना दुर्दशा ग्रस्त क्यों है।

भारत भारती के वर्तमान खंड के उपखंडों के शीर्षक है कृषि और कृषक, रईसों के सपूत और धर्म की दशा।

भारतवर्ष की श्रेष्ठता अतीत खंड का शीर्षक है।

शुभकामना भविष्यत खंड का शीर्षक है।

मैथिलीशरण गुप्त(1886)-

की प्रमुख रचनाएँ -

रंग में भंग 1909 ई., जयद्रथ वध 1910 ई., भारत भारती 1912 ई., किसान 1917 ई., पंचवटी 1925 ई., झंकार 1929 ई., विकटभट्ट 1929 ई.,

साकेत 1931 ई., यशोधरा 1932 ई., द्वापर 1936 ई., सिद्धराज 1936 ई., काबा और कर्बला 1942 ई., जय भारत 1952 ई., विष्णु प्रिया 1957 ई., अर्जुन और विसर्जन, रत्नावली अंतिम।

**Q27.** 'मानस का हंस' उपन्यास के बारे में है असत्य कथन है?

- (A). मानस का हंस उपन्यास की कथा कल 31 अंकों में विभाजित है।
- (B). इस उपन्यास में काशी में भयानक महामारी फैलने का जिक्र है जिसमें तुलसीदास लोगों को बचाने का प्रयास करते हैं।
- (C). कवितावली, हनुमान बाहुक, और विनय पत्रिका इन रचनाओं में तुलसी के संघर्ष भरे जीवन की झलक मिलती है।
- (D). यह उपन्यास 4 जून 1976 ई को लखनऊ से शुरू किया गया और 23 मार्च 1972 अयोध्या में पूर्ण हुआ।

Answer: d

Solution:

'मानस का हंस' उपन्यास के बारे में है असत्य कथन है-यह उपन्यास 4 जून 1976 ई को लखनऊ से शुरू किया गया और 23 मार्च 1972 अयोध्या में पूर्ण हुआ।

क्योंकि यह उपन्यास 4 जून 1971 ई. को तुलसी स्मारक भवन अयोध्या में लिखना आरंभ करके 23 मार्च 1972 रामनवमी के दिन लखनऊ में पूरा किया गया और चिरंजीवी भगवत् प्रसाद पांडे ने लिपिक का काम किया।

सत्य कथन

(a) मानस का हंस उपन्यास की कथा कल 31 अंकों में विभाजित है।

(b) इस उपन्यास में काशी में भयानक महामारी फैलने का जिक्र है जिसमें तुलसीदास लोगों को बचाने का प्रयास करते हैं।

(c) कवितावली, हनुमान बाहुक, और विनय पत्रिका इन रचनाओं में तुलसी के संघर्ष भरे जीवन की झलक मिलती है।

'मानस का हंस' -

लेखक: अमृतलाल नागर

यह उपन्यास गोस्वामी तुलसीदास के जीवन और विचारों पर आधारित है।

उपन्यास के आमुख में नागर जी ने स्पष्ट लिखा है कि उन्होंने इसे लिखने से पहले तुलसीदास की कई रचनाओं का गहराई से अध्ययन किया।

विशेष रूप से उन्होंने 'विनयपत्रिका' को ध्यानपूर्वक पढ़ा और समझा, क्योंकि उसमें तुलसी का आत्मालाप, वैराग्य, भक्ति की गहराई और समकालीन सामाजिक पीड़ा सुखर रूप में प्रकट होती है।

"मानस का हंस" -

हिंदी साहित्य का एक प्रसिद्ध उपन्यास है जिसे अमृतलाल नागर ने लिखा है। यह उपन्यास गोस्वामी तुलसीदास के जीवन पर आधारित है और 1972 में प्रकाशित हुआ था। नागर जी ने इस उपन्यास में तुलसीदास को एक सामान्य मनुष्य के रूप में चित्रित

किया है, उनके बचपन के संघर्षों से लेकर राम नाम के मार्ग पर चलने तक की कहानी को दर्शाया है।

**प्रमुख पात्र:**

तुलसीदास, रत्नावली (उनकी पत्नी), पार्वती अम्माँ (जिन्होंने तुलसीदास का पालन-पोषण किया), और अन्य कई ऐतिहासिक पात्र।

**उद्देश्य:**

उपन्यास का उद्देश्य तुलसीदास के जीवन और उनके कार्यों के माध्यम से मध्ययुगीन समाज और संस्कृति को चित्रित करना है।

**Q28.** राग दरबारी उपन्यास के बारे में कौन से कथन सही हैं?

- A. इस उपन्यास का प्रकाशन 1968 ई. में हुआ
  - B. यह उपन्यास पूर्णता व्यंग्य शैली में लिखा गया है जिसमें हास्य का पुट नजर आता है
  - C. राग दरबारी 42 अंशों में विभक्त संवाद शैली में रचित उपन्यास है
  - D. शिवपाल गंज नामक गांव के माध्यम से स्वतंत्र उत्तर भारत की शासन व्यवस्था नई व्यवस्था और शिक्षा व्यवस्था आदि की पोल खोल कर रखी है
  - E. राग दरबारी उपन्यास पर 1960 ई. में ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला
- (A). A, B और C  
 (B). A, C और E  
 (C). A, D और E  
 (D). A, B और D

Answer: d

Solution:

राग दरबारी उपन्यास के बारे में सही कथन - A, B और D

इस उपन्यास का प्रकाशन 1968 ई. में हुआ

यह उपन्यास पूर्णता व्यंग्य शैली में लिखा गया है जिसमें हास्य का पुट नजर आता है

राग दरबारी 35 अंशों में विभक्त रिपोर्टर शैली में रचित उपन्यास है

शिवपाल गंज नामक गांव के माध्यम से स्वतंत्र उत्तर भारत की शासन व्यवस्था नई व्यवस्था और शिक्षा व्यवस्था आदि की पोल खोल कर रखी है

राग दरबारी उपन्यास पर 1969 ई. में साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला

व्यंग्य शैली में होने के कारण हँसी मजाक को रोना दोनों का अनुभव एक साथ होते हैं यहां धारदार व्यंग्य मनोरंजन के साथ-साथ पाठक को आत्म निरीक्षण का भी अवसर बख्बरी प्रदान करता है भारतीय शासन व्यवस्थाएं व्यक्ति में व्यापक धोखाधड़ी, भ्रष्टाचार, वंशवाद, जातिवाद, इत्यादि को कुछ इस तरह उभारा की पाठकों को उनकी तहो तक पहुंचता है

श्री लाल शुक्ल के उपन्यास -

सुनी धाटी का सूरज 1957 ई., अज्ञातवास 1962 ई., राग दरबारी 1968 ई., सीमाएँ टूटती है 1973 ई., मकान 1976 ई., पहला पड़ाव 1976 ई., विश्रामपुर का संत 1998 ई.

**Q29.** कबीर काव्य के बारे में कौन से कथन सत्य हैं?

- A. कबीर काव्य में उपलब्ध अहिंसा का तत्व वैष्णव संप्रदाय की देन है
  - B. कबीर ने भारतीय ब्रह्मवाद के साथ सूफियों से भावात्मक रहस्यवाद लिया
  - C. इस्लाम से साधनात्मक रहस्यवाद लिया
  - D. वैष्णवों से अहिंसावात तथा पर प्रपतिवाद
  - E. हठयोगियों से एकेश्वरवाद ग्रहण किया
- (A). केवल A, B और D  
 (B). केवल A, C और E  
 (C). केवल A, D और E

(D). केवल A, B और C

Answer: a

Solution:

कबीर काव्य के बारे में सत्य कथन है-केवल A, B और D

A. कबीर काव्य में उपलब्ध अहिंसा का तत्व वैष्णव संप्रदाय की देन है

B. कबीर ने भारतीय ब्रह्मवाद के साथ सूफियों से भावात्मक रहस्यवाद लिया

D. वैष्णवों से अहिंसावात तथा पर प्रपतिवाद

कबीर काव्य में उपलब्ध अहिंसा का तत्व वैष्णव संप्रदाय की देन है

कबीर ने भारतीय ब्रह्मवाद और के साथ सूफियों से भावात्मक रहस्यवाद लिया है

हठयोगीयों से साधनात्मक रहस्यवाद

इस्लाम से एकेश्वरवाद

वैष्णवों से अहिंसावाद तथा प्रपतीवाद

कबीर - जन्म -1398 ई. लहरतारा काशी में

मृत्यु - 1518 ई.

कबीर ने साखी, सबद और रमेनी की रचना की है

कबीर पढ़े लिखे न थे तथा कविता करना उनका उद्देश्य भी नहीं था

कबीर की रचनाओं का संकलन बाद में उनके शिष्य धर्मदास ने बीजक नाम से किया है

साखी - कबीर ग्रन्थावली में 'साखी' का अर्थ साक्षी से है

इसमें कबीर ने साक्षात्कृत अनुभूतियों का वर्णन किया है

यह दोहे या साखियां कबीर की आध्यात्मिक अनुभूतियों की गवाह हैं तथा साक्षी हैं

सबद - दोहे या साखियों के अतिरिक्त कबीर ने पद भी लिखे हैं जिन्हें सबद कहा जाता है

कबीर ने अपनी साखियों में अपने सतगुरु के उपदेशों के लिए सबद का प्रयोग किया

सबद का सद्वा तात्पर्य राग - रागिनीयों में है

रमेनी - इसमें कबीर ने माया का वर्णन किया है

**Q30. राहुल सांकृत्यायन द्वारा रचित 'मेरी तिब्बत यात्रा' पुस्तक की विषय सूची का सही क्रम है?**

पुस्तक की विषय सूची है -

A. ल्हासा से उत्तर की ओर

B. चाड़ की ओर

C. स्क्य की ओर

D. जेनम् की ओर

E. नेपाल की ओर

(A). A, C, D, B, E

(B). A, B, C, E, D

(C). A, B, C, D, E

(D). A, D, E, C, B

Answer: c

Solution:

राहुल सांकृत्यायन द्वारा रचित 'मेरी तिब्बत यात्रा' पुस्तक की विषय सूची का सही क्रम है-A, B, C, D, E

पुस्तक की विषय सूची है -

A. ल्हासा से उत्तर की ओर

B. चाड़ की ओर

C. स्क्य की ओर

D. जेनम् की ओर

E. नेपाल की ओर

मेरी तिब्बत यात्रा -

यह राहुल सांकृत्यायन द्वारा रचित यात्रा वृत्तांत है

इसका प्रकाशन वर्ष 1937 ई. है

इसमें लेखक ने तिब्बत के समाज एवं संस्कृति तथा वहाँ के प्राकृतिक सौंदर्य व जलवायिक परिस्थितियों का जीवंत चित्रण किया है

साथ ही वहाँ के प्राचीन महत्वपूर्ण मंदिर में जाकर तथा प्रबुद्ध वर्ग के लोगों से मिलकर वहां मौजूद बड़ी मात्रा में सैकड़ों वर्षों पुरानी पांडुलिपियों का पता लगाया

पुस्तक की विषय सूची है -

1. ल्हासा से उत्तर की ओर
2. चाङ की ओर
3. स्कय की ओर
4. जेनम् की ओर
5. नेपाल की ओर

ल्हासा की ओर (परिशिष्ट)

यात्रा के अंतिम दो अध्याय 'सरस्वती': में निकले थे और चित्र 'सरस्वती' तथा 'प्रवासी' (बंगला) में प्रकाशित हुए थे। राहुल सांकृत्यायन द्वारा रचित "मेरी तिब्बत यात्रा" एक यात्रा वृत्तांत है जो तिब्बत की उनकी यात्रा के अनुभवों को दर्शाता है। यह पुस्तक 1937 में प्रकाशित हुई थी, जिसमें उन्होंने तिब्बत की यात्रा के दौरान देखे गए ऐतिहासिक स्थलों, बौद्ध ग्रंथों और वहां के लोगों के बारे में लिखा है।

यात्रा वृत्तांत की मुख्य बातें:

यात्रा का उद्देश्य:

राहुल सांकृत्यायन तिब्बत में ऐतिहासिक सामग्री और बौद्ध ग्रंथों की खोज के लिए गए थे।

यात्रा का विवरण:

उन्होंने अपनी यात्रा में पैदल, घोड़े और खच्चर से यात्रा की। वे कठिनाइयों और विषम परिस्थितियों से गुजरते हुए भी अपनी यात्रा जारी रखे।

सांस्कृतिक और प्राकृतिक सौंदर्य:

यात्रा के दौरान उन्होंने तिब्बत की संस्कृति और प्राकृतिक सुंदरता का वर्णन किया है, खासकर वहां की प्राकृतिक सुंदरता का।

ज्ञान की खोज:

राहुल जी ने इस यात्रा के दौरान प्राचीन पुस्तकों का संकलन किया, साथ ही मूर्तियों, चित्रों और आभूषणों के चित्र भी खींचे।